eISSN:3107-3573
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION

PERSPECTIVE ARTICLE

जीवन विद्या - वैश्विक समस्याओं का सार्वभौमिक समाधान

गुरु गोविन्द विश्वकर्मा[1], मोना सिंह[2]

[1]इतिहास एवं भारतीय संस्कृति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत
[2]प्राध्यापक, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

सारांश - वर्तमान समय में विश्व अनेकों समस्याओं से जूझ रहा है—जैसे कि युद्धों की बढ़ती गति, हिंसा का प्रकोप, पर्यावरण संकट, नैतिकता का पतन, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, भौतिकवाद की वृद्धि और असमानता आदि। केवल अपने को विस्तारित एवं पोषित करने की स्वार्थपूर्ण एवं संकीर्ण धारणाएँ वैश्विक समस्याओं का मूल कारण हैं। मनुष्य की विशेषता ज्ञान है। ज्ञान का अर्थ जानकारियाँ (नॉलेज) नहीं हैं, अपितु ज्ञान का अर्थ—प्रज्ञा (विज़डम) है। ज्ञान के अभाव में मनुष्य चेतन होते हुए भी नीचे दर्जे में गिना जाता है। ज्ञान के कारण मनुष्य विचारशील और मननशील बन पाता है तथा अपने स्तर को ऊँचा उठाता है। ज्ञान की दो धाराएँ हैं और दोनों को ही बढ़ाना चाहिए। पहली धारा वह है जो हमें जीविका अर्जन योग्य बनाती है—उसे शिक्षा कहते हैं। शिक्षा का मूल उद्देश्य जीविकोपार्जन और जानकारियाँ हैं। दूसरी धारा वह है जो आत्मिकता व संवेदनाओं को दर्शाती है—उसे विद्या कहते हैं। पंडित श्रीराम शर्मा जी के अनुसार विद्या को ही विवेक, अध्यात्म विद्या, ऋतम्भरा प्रज्ञा, गायत्री एवं प्रज्ञा कहा गया है। विद्या का मूल उद्देश्य उचित और अनुचित का फर्क समझकर सदैव उचित को अपनाना है। इस शोध पत्र में यह प्रतिपादित किया गया है कि वैश्विक समस्याओं का स्थायी समाधान केवल शिक्षा व तकनीकी ज्ञान से संभव नहीं, अपितु विद्या व विवेक में निहित है।

कूटशब्द - शिक्षा, विद्या, ज्ञान, वैश्विक समस्याएँ, भारतीय समाधान

*CORRESPONDENCE
Department of History And Indian Culture, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar, India.
Email: mona.yadav@dsvv.ac.in

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya
Gayatrikunj-Shantikunj,
Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2025 Vishwakarma & Singh
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

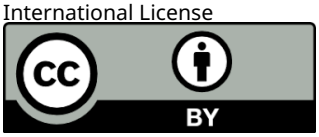

भूमिका

वर्तमान समय में विश्व अनेक समस्याओं से जूझ रहा है, जो केवल भौतिक तक ही सीमित नहीं, अपितु मानसिक, आंतरिक एवं नैतिक भी हैं। पर्यावरण प्रदूषण, मानसिक तनाव, पारिवारिक विघटन, जलवायु संकट, बेरोजगारी, युद्ध और आतंकवाद—यह सभी समस्याएँ कहीं न कहीं मानवीय मूल्यों के अभाव से उत्पन्न हुई हैं [1]। 21वीं सदी में मानव विज्ञान, तकनीक और आधुनिकता के उच्च शिखरों तक पहुँच गया है। परंतु वैश्विक स्तर पर समाज, व्यक्ति एवं प्रकृति गहरे संकटों का सामना कर रहे हैं। स्वार्थ, कलह, प्रदूषण, शोषण एवं भोगवादी संस्कृति जैसी समस्याएँ मानव अस्तित्व को चुनौती दे रही हैं [1]। प्रश्न यह है कि क्या इन सभी वैश्विक समस्याओं का सार्वभौमिक समाधान संभव है? भारतीय चिंतन परंपरा में इसका उत्तर जीवन विद्या के रूप में प्रदर्शित होता है, जो न केवल आत्मज्ञान की शिक्षा देती है, अपितु सत्य, संतुलन एवं मानवीय आदर्शों पर आधारित जीवन-दर्शन प्रस्तुत करती है। भारतीय संस्कृति ने प्राचीन समय से ही धर्म, शिक्षा, सत्य, विवेक एवं अहिंसा के सिद्धांतों पर जोर दिया है, क्योंकि इनके अभाव में मनुष्य प्रकृति से खिलवाड़ करके समस्याओं को जन्म देता है। भारत की संस्कृति परंपरा की आधुनिक अभिव्यक्ति है—जीवन विद्या [2], जो मानव में देवत्व एवं धरती पर स्वर्ग की प्रेरणा प्रदान करती है। यह मानती है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य ही वैश्विक समस्याओं का समाधान है।

जीवन विद्या

जीवन को सार्थक ढंग से जीने की विधा को जीवन विद्या कहते हैं। इसकी सीमा शिक्षा तक सीमित न होकर, जीवन के संपूर्ण को समझने और उसके मार्गदर्शन तक व्यापक है [2]। आधुनिक समय में शिक्षा का उद्देश्य जानकारी, तकनीकी दक्षता और रोजगार तक सीमित है, परंतु विद्या जीवन के उद्देश्य, विवेक, नैतिकता और मानवता से परिपूर्ण है [2]। ज्ञान के अभाव में मनुष्य चेतन होते हुए भी नीचे दर्जे में गिना जाता है। अर्थात् जिस प्रकार वनस्पति, मक्खी, मच्छर, कीड़े-मकोड़े, चिड़िया आदि चेतन होते हुए भी ज्ञान के अभाव में मनुष्य की तुलना में नीचे दर्जे में आते हैं, इसलिए मनुष्य को ज्ञान का देवता माना गया है। शास्त्रों में विद्या को अमृत बताया गया है—'विद्या अमृतमश्नुते' (कठोपनिषद् 2.3.9)। बुद्ध, समर्थ गुरु रामदास, विवेकानंद, आदि गुरु शंकराचार्य सभी विद्या के उपासक थे। जिस प्रकार हंस दूध और पानी को अलग कर देता है, ठीक उसी प्रकार विवेकवान व्यक्ति सही और गलत का निर्धारण कर पाता है [1]। विद्या के दो ही कार्य हैं—पहला फैसला करना और दूसरा व्यवहार में उतारना। 'सा विद्या या विमुक्तये' (विष्णु पुराण 1.19.41) अर्थात् विद्या से व्यक्ति स्वतंत्र बनता है। विवेकानंद जी ने अपने विद्या एवं विवेक से विश्व को मार्गदर्शन दिया तथा वैश्विक जागृति का उद्घोष किया। ठीक उसी प्रकार 'शिक्षा ही नहीं अपितु विद्या भी' का सिद्धांत ही वर्तमान में वैश्विक शांति, समानता एवं सतत विकास का आधार है। विद्या व्यक्ति को केवल जानकारी नहीं, अपितु विवेकशील और उत्तरदायी मानव के रूप में विकसित करती है।

- जीवन विद्या वह शिक्षा है जो व्यक्ति को न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम बनाती है, अपितु उसे नैतिक, संवेदनशील एवं जिम्मेदार भी बनाती है।

- जीवन विद्या का लक्ष्य केवल जीविकोपार्जन नहीं, अपितु सार्थक, संतुलित और सहयोगपूर्ण जीवन है।

- जीवन विद्या व्यक्ति निर्माण, समाज कल्याण एवं वैश्विक शांति और उत्थान की प्रेरणा प्रदान करती है।

शिक्षा और विद्या का महत्व

शिक्षा को समाज और मानव जीवन की प्रगति का मूल आधार माना जाता है। आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने व्यक्ति को पढ़ने-लिखने, गणना करने और तकनीकी दक्षता प्राप्त करने का अवसर दिया है, परंतु यह शिक्षा जीवन के गहरे प्रश्नों और वास्तविक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने में असफल रही है। डिग्री, प्रमाणपत्र और विषयगत ज्ञान से सम्पन्न होकर भी व्यक्ति अनेक बार बेरोज़गारी, अहंकार, स्वार्थ और नैतिक पतन की ओर बढ़ जाता है [3]। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि केवल शिक्षा ही पर्याप्त नहीं है। भारतीय दर्शन ने हमेशा विद्या को शिक्षा से श्रेष्ठ स्थान दिया है। विद्या का अर्थ केवल जानकारी या विषयगत दक्षता नहीं, बल्कि वह विवेक है जो व्यक्ति को सही और गलत का भेद करना सिखाता है। विद्या मानव जीवन को नैतिकता, विनम्रता, करुणा और जिम्मेदारी से जोड़ती है। यही कारण है कि शास्त्रों में कहा गया है कि विद्या-रहित शिक्षा "ब्रह्मराक्षस" के समान होती है—ऐसा व्यक्ति जिसके पास ज्ञान तो है, पर विवेक और मानवीयता का अभाव है [3]। संस्कृत साहित्य में विद्या के महत्त्व को कहा गया है— "विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्॥" (हितोपदेश - अध्याय 1, श्लोक 6) अर्थात् विद्या विनम्रता देती है, विनम्रता से योग्यताएँ आती हैं, योग्यताएँ धन और संसाधन प्रदान करती हैं, और अंततः यही धर्म और सुख का मार्ग प्रशस्त करती हैं। विद्या के बिना शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन बनकर रह जाती है। जबकि शिक्षा और विद्या का संतुलित रूप ही जीवन को सार्थक बनाता है। शिक्षा हमें बाहरी ज्ञान देती है, लेकिन विद्या हमें आंतरिक शक्ति, चरित्र और मानवीय दृष्टि प्रदान करती है [2]। जब ये दोनों एक साथ मिलते हैं, तभी व्यक्ति न केवल विद्वान बनता है बल्कि सज्जन, विवेकशील और उत्तरदायी नागरिक के रूप में समाज के कल्याण का साधन भी बनता है। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में "जीवन विद्या" को सार्वभौमिक समाधान माना गया है। यह केवल किसी एक संस्कृति तक सीमित नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता को सही दिशा देने का मार्ग है। शिक्षा और विद्या का समन्वय ही वैश्विक समस्याओं से जूझते आधुनिक विश्व को शांति, सहयोग और स्थायी समाधान प्रदान कर सकता है।

वैश्विक समस्याएं भारतीय समाधान

मानव जीवन में आने वाली कठिन समस्याओं का समाधान प्रायः सरल उपायों में ही छिपा होता है [3]। जैसे उपजाऊ भूमि पर स्वाभाविक रूप से हरियाली उगती है, वैसे ही संतुलित और विवेकपूर्ण जीवन में समस्याएँ स्वतः घट जाती हैं। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में असंतुलित उपभोग, संसाधनों का दुरुपयोग और मानसिक अस्थिरता ही अधिकांश संकटों की जड़ हैं [1]। सामाजिक असमानता, हिंसा, प्रदूषण और बेरोज़गारी इनसे ही जन्म लेते हैं। भारतीय चिंतन स्पष्ट करता है कि कठिन समस्याओं का समाधान बाहरी साधनों में नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टि और आचरण में है। सादगीपूर्ण जीवन, ईमानदारी, परिश्रम और सह-अस्तित्व को अपनाकर जटिल समस्याएँ सहज रूप से हल हो सकती हैं। जैसा कि उपनिषदों में कहा गया है— "सत्येन धार्यते पृथिवी, सत्येन तपति सूर्यः। सत्येन वायुः पवते, सत्यं हि परमं पदम्॥" (मनुस्मृति - 8.15) अर्थात् सत्य और सदाचार ही प्रकृति तथा समाज की वास्तविक आधारशिला हैं। यदि मानव लालच और

https://doi.org/10.36018/dsijhs12334

हिंसा त्याग दे, तो गरीबी और युद्ध जैसी वैश्विक चुनौतियाँ स्वतः समाप्त हो सकती हैं। भारतीय समाधान का मूल यही है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर, विवेक और सह-अस्तित्व के भाव को अपनाए। सरल जीवन और उच्च विचार ही वे साधन हैं जो जटिल से जटिल समस्याओं को भी सहज बना देते हैं [3]। यही दृष्टिकोण "वैश्विक समस्याओं का भारतीय समाधान" है।

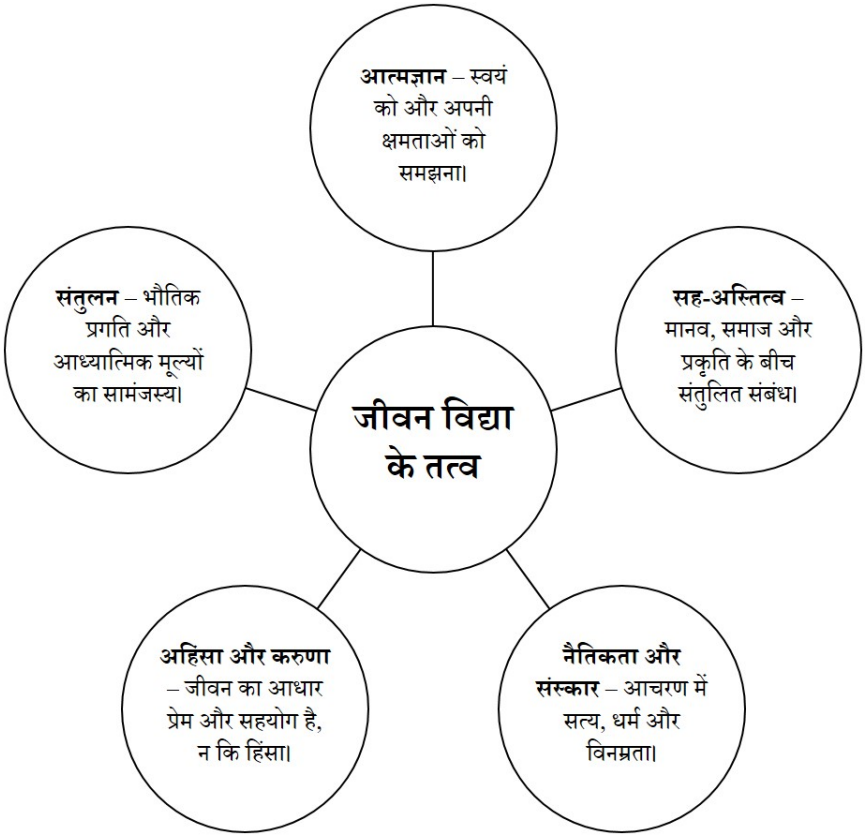

चित्र 1: यह चित्र जीवन विद्या के तत्वों की विवेचना करता है।

शिक्षा पद्धति और जीवन विद्या

आज की दुनिया में शिक्षा को मुख्य रूप से जीविका अर्जन का साधन माना जाता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति को दक्ष बनाकर आर्थिक रूप से सक्षम करना है। लेकिन भारतीय परम्परा केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने 'विद्या' या 'प्रज्ञा' को सर्वोपरि माना [3]। विद्या का लक्ष्य केवल जीविका नहीं, बल्कि जीवन के उच्च आदर्शों की प्राप्ति है। यह व्यक्ति के भीतर करुणा, उदारता और नैतिकता को जाग्रत करती है। आधुनिक युग में शिक्षा तो है, परन्तु ज्ञान और प्रज्ञा का लोप होता जा रहा है। परिणामस्वरूप अपराध, हिंसा, भ्रष्टाचार, मानसिक अस्वस्थता, प्रदूषण और युद्ध जैसी समस्याएँ गहराती जा रही हैं। विज्ञान और तकनीक प्रगति तो कर रहे हैं, किन्तु वे मानवीय मूल्यों के बिना अधूरे हैं [2]। यही कारण है कि केवल शिक्षा वैश्विक संकटों का समाधान नहीं कर पा रही। भारतीय दृष्टिकोण कहता है—

"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।" (तैत्तिरीय उपनिषद् - 2.1.1) सत्य और ज्ञान ही ब्रह्म है। अर्थात् ज्ञान या प्रज्ञा ही वह शक्ति है जो अंधकार को मिटाकर मानवता को प्रकाश देती है। प्राचीन भारत में शिक्षा 'आश्रमों', 'गुरुकुलों' और 'देवालयों' में दी जाती थी। वहाँ विद्या का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि व्यक्ति का समग्र विकास था। ऋषि-मुनि शिष्य को आत्मानुशासन, संयम, सहयोग और सेवा की भावना सिखाते थे [2]। इस प्रकार विद्या जीवन की सरल समस्याओं से लेकर जटिल समस्याओं तक का समाधान बन जाती थी। आज जब विश्व हिंसा, असमानता और पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है, तब केवल भारतीय समाधान ही मार्ग दिखाता है। शिक्षा को 'प्रज्ञा' के साथ जोड़ना आवश्यक है। यही वह सरल समाधान है, जिससे कठिन वैश्विक समस्याओं का हल सम्भव है। "विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयंसह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥" (ईशावास्य उपनिषद् मंत्र 11) अर्थात्, जो शिक्षा (अविद्या) और प्रज्ञा (विद्या) दोनों को जानता है, वही जीवन में संतुलन बनाकर अमरत्व (अमर मूल्यों) को प्राप्त करता है।

निष्कर्ष

मानव जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्त समस्याएं देखने में भले ही कठिन एवं जटिल प्रतीत हों, परंतु उनका समाधान भारतीय जीवन विद्या द्वारा अत्यंत सरल है [3]। विश्व की समस्त समस्याओं का कारण बाहरी परिस्थितियां नहीं, अपितु मनुष्य का दृष्टिकोण, विचारधारा और आचरण है [1]। जब मनुष्य जीवन केवल भौतिक साधनों तक सीमित रह जाता है और शिक्षा मात्र रोजगार का साधन

बनकर, तब असमानता, हिंसा, असंतुलन और असंतोष बढ़ने लगता है। मनुष्य की वास्तविक प्रगति वही है, जहां शिक्षा का समन्वय मानवीय मूल्यों के साथ हो [2]। वैश्विक स्तर में संतुलन, विवेक और करुणा का विकास होते ही समस्त कठिनाइयां सरल हो जाती हैं और वैश्विक समस्याओं का समाधान सहज रूप से संभव हो जाता है। जीवन विद्या का सार मनुष्य को अपने जीवन को समझने तथा जीवन जीने की कला सिखाने में है। अतः यह स्पष्ट है कि वैश्विक समस्याओं का वास्तविक और सार्वभौमिक समाधान बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि जीवन विद्या से ही सम्भव है। यही मार्ग सम्पूर्ण मानवता को शांति, समृद्धि और संतुलन की ओर अग्रसर करता है।

Acknowledgements: श्री सदा शिव सदगुरु प्रभु को नमन, जिनके द्वारा प्रदत्त प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं शक्ति से यह कार्य सम्भव हुआ। युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी को नमन, जिनके संरक्षण एवं शब्द चयन की सूक्ष्म प्रेरणा से यह कार्य सम्भव हुआ।
Compliance: Not required.
Conflict of Interest: लेखकों का इस शोध पत्र से संबंधित कोई स्वार्थ एवं हित द्वंद्व नहीं है।

संदर्भ

[1] ब्रह्मवर्चस (सम्पादक). समस्त विश्व को भारत के अजस्त्र अनुदान – पं श्रीराम शर्मा आचार्य वांग्मय 35. प्रथम संस्करण. मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत; अखण्ड ज्योति संस्थान; 1995.

[2] ब्रह्मवर्चस (सम्पादक). शिक्षा एवं विद्या – पं श्रीराम शर्मा आचार्य वांग्मय 49. संशोधित संस्करण. मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत: अखण्ड ज्योति संस्थान; 2019.

[3] शर्मा प. श्रीराम. प्रॉब्लम्स ऑफ टुडे – सॉल्यूशंस फॉर टुमॉरो - गायत्री तपोभूमि, मथुरा, भारत: युग निर्माण योजना;1997.